HINDUSTAN PAGE 6

लाल मुनिया के जीवन चक्र पर एलयू में होगा शोध

अच्छी खबर

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

लखनऊ विश्वविद्यालय के बॉटनी विभाग में लाल मुनिया चिड़िया के जीवन चक्र, प्रजनन, उसके व्यवहार और मनोवैज्ञानिक क्रियाकलाप पर अध्ययन किया जाएगा। यह अध्ययन एसईआरबी (साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड) द्वारा स्वीकृत प्रोजेक्ट के अंतर्गत किया जाएगा। इसके लिए विभाग को एसईआरबी 65 लाख रुपए का बजट स्वीकृत हुआ है। यह अध्ययन तीन वर्ष में पूरा किया जाएगा।

प्रोजेक्ट पर काम कर रही बॉटनी विभाग की डॉ. शैली मलिक ने बताया कि शुरुआत अध्ययन में यह पता चला है कि लाल मुनिया, अन्य चिड़ियों की प्रजाति से अलग है। मसलन ज्यादातर चिड़िया प्रजनन के मामले में गर्मियों में सक्रिय होती हैं, वहीं कुछ पतझड़ और सर्दियों में। मगर लाल मुनिया के साथ ऐसा नहीं है। यह सबसे ज्यादा सितम्बर महीने में एक्टिव होते हैं, मगर एक जो चौंकाने वाली बात दिखी वह ये कि लाल मुनिया हर परिस्थिति में रह सकती है। सबसे ज्यादा यह तब एक्टिव होती है जब दिन छोटे और रातें बड़ी होने लगती हैं। लाल मुनिया के जीवन में सबसे बड़ी भूमिका प्रकाश की होती है। जैसे बाकी चिड़ियों को सूरज की रोशनी ज्यादा होती है।

एलयू छात्राओं की सुरक्षा के लिए लॉन्च करेगा ऐप

तैयारी

लखनऊ | आंचल अवस्थी

लखनऊ विश्वविद्यालय जल्द ही परिसर में आने वाली और एलयू के हॉस्टलों में रहने वाली छात्राओं के लिए एक मोबाइल ऐप लॉन्च करेगा। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि जल्द ही वह इसके लिए टीम के साथ बैठक करके पूरी कार्ययोजना तैयार करवाएंगे।

उन्होंने बताया कि ऐप बनाने के लिए विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग फैकल्टी के छात्र-छात्राओं की मदद भी ली जाएगी। इसके अलावा छात्राओं के सुझावों के आधार पर ऐप में लेटेस्ट फीचर जोड़े जाएंगे ताकि छात्राओं को एक क्लिक पर सभी जरूरी फोन नम्बर, शिकायत पटल, निस्तारण की जानकारी आदि मिल सके। कुलपति का कहना है कि ऐप इस तरह से डिजाइन किया जाएगा जिससे इस्तेमाल करने में बहुत कठिन न हो और छात्राएं इसे अपनी सहूलियत के लिए आसानी से प्रयोग कर सकें।

2015 में भी शिकायत के लिए लॉन्च हुआ था ऐप

यह पहली बार नहीं है जब लखनऊ विवि इस तरह का कोई प्रयोग करने जा रहा है। 18 अगस्त 2015 को तत्कालीन चीफ प्रॉक्टर प्रो. निशि पांडेय के निर्देशन में छात्राओं की सुरक्षा के लिए रक्षक ऐप लॉन्च किया गया था। प्ले स्टोर पर था। छात्राएं अवांछित घटना की शिकायत कर सकती थीं। कुछ ही मिनटों में उन्हें मदद उपलब्ध कराई जाती थी।

> छात्राओं की सुरक्षा के लिए चल रहे किसी पुराने ऐप के बारे में जानकारी नहीं है। हां यह जरूर है कि हम ऐसा एक ऐप, लेटेस्ट तकनीक को इस्तेमाल करते हुए बनाने पर विचार कर रहे हैं। इसमें हम अपने इंजीनियरिंग के छात्र-छात्राओं की मदद भी लेंगे।
>
> प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : अन्य चिड़ियों से अलग है तेलिया-मुनिया

प्राणि विज्ञान विभाग पक्षी व्यवहार पर करेगा शोध

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय का प्राणि विज्ञान विभाग तेलिया मुनिया (चिड़िया) में चक्रीय जनन ग्रंथि के विकास आदि पर शोध करेगा। इसके लिए केंद्र के साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड (सर्व) को प्रोजेक्ट भेजा है। विभाग की डॉ. शैली मलिक ने बताया कि यह चिड़िया अन्य से थोड़ी अलग है। विभाग की लैब में हुए काम के अनुसार एक तरफ जहां सामान्य चिड़िया प्रजनन के लिए गर्मी के मौसम को सबसे अनुकूल मानती हैं वहीं तेलिया-मुनिया पतझड़ के मौसम को। जहां अन्य चिड़िया इसके लिए किसी भी समय को अनुकूल मानती हैं वहीं तेलिया-मुनिया रात के समय को। उन्होंने बताया कि रात में काफी अधिक प्रकाश होने व पर्यावरण में होने वाले बदलाव भी इनकी प्रजनन प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है।

उन्होंने बताया कि पक्षी अपने व्यवहारिक और कार्यिकी प्रक्रियाओं को समय पर रखने के लिए दैनिक और वार्षिक टाइमर के रूप में प्राकृतिक दिन की अवधि पर भरोसा करते हैं। प्राकृतिक व प्रयोगशाला दोनों में दीप्तिकालिक पक्षियों पर किए गए प्रयोगों ने उनके व्यवहार और कार्यिकी के बारे में बहुत कुछ बताया है। तेलिया मुनिया असामान्य प्रकाश संवेदनशीलता को दिखाती है और इस प्रकार इसे गैर दीप्तिकालिक पक्षी के रूप में जाना जाता है। डॉ. शैली ने बताया कि इसके आणविक सहसंबंधों आदि की जांच व अन्य चीजों की जानकारी के लिए यह प्रोजेक्ट तैयार किया गया है। (माई सिटी रिपोर्टर)

विवि-कॉलेजों में आज मनेगा यूपी दिवस

लखनऊ। उच्च शिक्षा विभाग के निर्देश पर सोमवार को राजधानी के सभी विश्वविद्यालय व कॉलेजों में उत्तर प्रदेश दिवस मनाया जाएगा। लविवि के रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार सिंह ने सभी सहयुक्त कॉलेजों को चुनाव आचार संहिता व कोविड प्रोटोकॉल का ध्यान रखते हुए कार्यक्रम करने को कहा है। हालांकि, कोरोना के चलते शिक्षण संस्थान बंद हैं। इसलिए आयोजन ऑनलाइन ही होंगे। (माई सिटी रिपोर्टर)

THE PIONEER PAGE 3

LU carrying out research on spotted munia

Lucknow (PNS): Birds largely rely upon the natural day length as daily and annual timer to time their behavioral and physiological processes for their reproductive activity, depending on the availability of light in the environment. Several experiments on birds, both in wild and in laboratory conditions, have revealed a lot about the behaviour and physiology of photo periodic birds.

But spotted munia shows an atypical photosensitivity and thus is considered as a non-photoperiodic bird. It has been found to respond even under dark-dominant photoperiodic regime and has shown persistent annual rhythm under constant light conditions.

In view of this, Dr Shalie Malik from the Zoology department of Lucknow University has taken up a study to address the issue in spotted munia in a research project funded by Science and Engineering Research Board (SERB), New Delhi. "The overall findings will enhance understanding of the internal timers of the vertebrates which could be utilised in the plans for overcoming the negative impact of environment such as growing urbanisation, use of bright light at night, climate change and habitat loss, and help in the conservation of these birds," she said.

"This investigation will monitor the involvement of molecules, other than the ones found in the photoperiodic birds, in the regulation of the reproductive cycle in this 'non photoperiodic' seasonally breeding bird. It is expected that the investigation will establish a relationship of the behavioural, daily activities and neural correlates during the reproductive cycle in a species during a period of approximately 12 months," she added.

JAGRAN CITY PAGE I

जागरण विशेष | लखनऊ विश्वविद्यालय के जूलाजी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर अमित त्रिपाठी ने किया शोध

विदेशी मछलियों के परजीवी बने देशी के लिए खतरा

अखिल सक्सेना ● लखनऊ

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि एक्वेरियम (मछली घर) में पाली जाने वाली सजावटी मछलियों में 15 ऐसे मोनोजीनियन परजीवी पाए गए हैं, जो भारतीय मछलियों के लिए खतरा हैं। हाल ही में लखनऊ विश्वविद्यालय के जूलाजी विभाग की ओर से किए गए शोध में इसकी पुष्टि हुई है। यह स्थिति तब है जबकि केंद्र सरकार की ओर से विदेशी मछलियों को भारत में लाए जाने से पहले क्वारंटाइन कर उपचार करने की गाइडलाइन है, ताकि यह मछलियां परजीवी से मुक्त हो जाएं। जूलाजी विभाग ने इसकी रिपोर्ट तैयार कर केंद्र सरकार को भेज दी है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के जूलाजी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. अमित त्रिपाठी मछलियों में परजीवियों की जैव विविधता पर काफी समय से शोध कर रहे हैं। उन्हें 2019 में केंद्र सरकार से भारत में एक्वेरियम मछली व्यापार के माध्यम से विदेशी हेल्मिथ परजीवी के प्रवेश और स्थापना का जैव विविधता मूल्यांकन विषय पर 55 लाख रुपये के बजट का शोध प्रोजेक्ट मिला था।

गोल्ड फिश व सजावटी चिक्लिड मछली ● सौजन्य : लखनऊ विश्वविद्यालय

18 प्रजाति की सजावटी विदेशी मछलियों में पाए गए 15 खतरनाक परजीवी

डा. अमित बताते हैं कि घरों में लोग जो सजावटी मछलियां (एक्वेरियम फिश) पालते हैं, वे विदेशी हैं। भारत में इसका बड़ा व्यापार है। इनमें पाए जाने वाले परजीवियों का पता लगाने के लिए लखनऊ, दिल्ली, कोलकाता और तिरुवनंतपुरम के मछली घरों से सजावटी गोल्ड फिश, कामन कार्प, गप्पी, आस्कर, चिक्लिड सहित 18 प्रजाति की मछलियां लेकर आए।

विभाग की लैब में शोध के दौरान इन सजावटी मछलियों में डैक्टाइलोगाइर, गाइरोडैक्टिलस, चिक्लिडोगाइरस, गुसेविया सहित 15 परजीवी मिले, जो देशी मछलियों के लिए खतरा हैं। बाराबंकी के घाघरा नदी के पास भी कार्प मछली मिली। इससे स्पष्ट हुआ कि ये विदेशी मछली नदियों में भी पहुंच चुकी हैं। इनके गिल्स व शरीर में सूक्ष्म परजीवी होते हैं जो पानी के माध्यम से भारतीय मछलियों के शरीर में पहुंच जाते हैं। इससे मछलियां मर सकती हैं।

गाइड लाइन का नहीं हो रहा पालन : डा. अमित बताते हैं कि केंद्र सरकार ने कई साल पहले गाइडलाइन बनाई थी। जिसमें कहा गया था कि विदेश आने वाली मछलियों को बंदरगाह, एयरपोर्ट पर क्वारंटाइन कर उपचार दिया जाएगा, जिससे ये परजीवी से मुक्त होने के बाद बेची जा सकें, लेकिन गाइडलाइन का पालन नहीं हो रहा। यह मछलियां काफी महंगी होती हैं। इन्हें खरीदने वाले दुकानदारों को इनके मरने से भारी नुकसान होता है।

तेलिया-मुनिया चिड़िया पर भी शोध करेगा लवि

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय (लवि) के प्राणि विज्ञान विभाग की शिक्षिका डा. शैली मलिक को विज्ञान एवं इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड की ओर से 65 लाख रुपये का शोध प्रोजेक्ट मिला है। इसमें तेलिया-मुनिया चिड़िया पर शोध किया जाएगा।

प्राणि विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डा. शैली मलिक ने बताया कि पक्षियों की जनन ग्रंथि में होने वाली गतिविधि पर्यावरण में प्रकाश की उपलब्धता पर निर्भर करती हैं। बटेर सहित कुछ चिड़िया गर्मी और बसंत के मौसम में प्रजनन करती हैं, लेकिन तेलिया मुनिया चिड़िया के प्रजनन का समय जाड़ा या पतझड़ होता है। इसे गैर-दीप्तिकालिक (नान फोटो पेरिओडिक) पक्षी के रूप में जाना जाता है। शोध में यह देखा जाएगा कि तेलिया मुनिया चिड़िया अन्य पक्षियों से किस प्रकार भिन्न है। कौन से अणु हैं जो अलग हैं। इसके चक्रीय जनन ग्रंथि के विकसन चक्र, आणविक सहसंबंधों की जांच आदि पर शोध कार्य होगा।

नए प्रवेश वाले विद्यार्थियों को 25 तक भरना होगा परीक्षा फार्म

जागरण संवाददाता, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने स्नातक-परास्नातक प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रमों में आधे से ज्यादा सत्र की पढ़ाई खत्म होने के बाद अब 12 कालेजों में 33 फीसद सीटें बढ़ाने का आदेश जारी किया है, लेकिन इन बढ़ी हुई सीटों पर प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए परीक्षा फार्म भरने की तिथि में कोई विस्तार नहीं किया गया।

ऐसे में जो भी विद्यार्थी प्रवेश लेंगे, उन्हें 25 जनवरी तक आनलाइन परीक्षा फार्म अनिवार्य रूप से भरना होगा वहीं, कालेजों को 28 से 31 जनवरी तक परीक्षा फार्म विश्वविद्यालय में जमा करना है। लवि ने चार अक्टूबर से स्नातक और परास्नातक प्रथम सेमेस्टर की पढ़ाई शुरू कर दी थी। इस बीच कई कालेजों ने छात्रहित में अतिरिक्त सीट वृद्धि की मांग की थी। इस प्रक्रिया में विश्वविद्यालय ने कई महीने गुजार दिए। अब 22 जनवरी को विश्वविद्यालय ने लखनऊ, हरदोई और लखीमपुर खीरी के 12 कालेजों में वर्तमान सत्र 2021-22 के लिए प्रथम वर्ष में 33 फीसद सीट बढ़ाने के आदेश जारी किया हैं। जिन कालेजों में सीटें बढ़ी हैं, उन पर जो भी विद्यार्थी प्रवेश लेंगे, उन्हें 25 जनवरी तक ही आनलाइन परीक्षा फार्म भी भरना है, लेकिन अभी तक कालेजों ने दाखिले की प्रक्रिया शुरू भी नहीं की है।

लखनऊ में इन कालेजों में बढ़ीं सीटें : अटल बिहारी वाजपेयी नगर निगम डिग्री कालेज-बीए, बीकाम, शिया पीजी कालेज सीतापुर रोड-बीए, बीएससी, बीकाम, टेक्नो इंस्टीट्यूट आफ हायर स्टडीज-बीकाम।

लखनऊ विश्वविद्यालय ने 12 कालेजों में 33 फीसद सीटें बढ़ाने का आदेश जारी किया, लेकिन परीक्षा फार्म की तिथि जस की तस

> स्नातक, परास्नातक प्रथम सेमेस्टर के परीक्षा फार्म भरने के लिए 25 जनवरी तक ही निर्धारित है। इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है।
>
> -विद्यानंद त्रिपाठी, परीक्षा नियंत्रक, लवि